अमर उजाला

प्रवाह

नई दिल्ली | मंगलवार, 19 फरवरी 2019

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

दूसरे इंसानों से नफरत करने की कीमत है खुद से मोहब्बत में कमी...
- एल्ड्रिज क्लीवर

अमेरिकी लेखक और राजनीतिक कार्यकर्ता

विकसित देशों से पीछे रह गई भारतीय रेल के पास सुधार के लिए ज्यादा वक्त नहीं है, फिर भी उम्मीद करनी चाहिए कि इस नई ट्रेन के जरिये वह अपेक्षित सुधार होगा और ट्रेनों की रफ्तार बढ़ने के साथ-साथ दूसरी सुविधाएं भी बढ़ेंगी।

वंदे भारत की रफ्तार

देश

की पहली सेमी हाई स्पीड ट्रेन वंदे भारत एक्सप्रेस का शुरुआती सफर बेशक उम्मीदों के अनुरूप न रहा हो, इसके बावजूद इसके प्रति लोगों में अद्‌भुत उत्साह दिखाई पड़ा है, जिसका सबसे बड़ा सुबूत यही है कि इस ट्रेन की इस महीने की तकरीबन सारी टिकटें बिक चुकी हैं। दिल्ली से वाराणसी के बीच की दूरी आठ घंटे में पूरी करने का दावा करने वाली यह ट्रेन हालांकि पहले कॉमर्शियल रन में करीब डेढ़ घंटे लेट हो गई, पर भूलना नहीं चाहिए कि ट्रायल के दौरान इसकी सर्वोच्च गति 180 किलोमीटर प्रति घंटे तक थी। बगैर इंजन वाली यह ट्रेन न केवल पूरी तरह स्वदेश में निर्मित है, बल्कि आयातित ट्रेनों की तुलना में इसकी लागत लगभग आधी आई है। भारतीय रेल इस ट्रेन को गेम चेंजर मान रही है, तो इसकी वजह है। उसकी योजना धीरे-धीरे शताब्दी की जगह इन ट्रेनों को चलाने की है, जो रफ्तार के मामले में ही नहीं, तकनीक और आधुनिकतम सहूलियतों के लिहाज से भी सबसे आगे है। दरअसल विकसित देशों ने अपनी रेल प्रणाली को जिस तरह आधुनिकतम किया है, हम उससे बहुत पीछे रह गए। हमारे यहां इस बीच हवाई यात्रा के क्षेत्र में तो काफी तरक्की हुई है, पर रेल यातायात में वैसी अपेक्षित प्रगति नहीं हो पाई। आज भी ट्रेनें धीमी रफ्तार से और लेट चलती हैं। ट्रेनों की संख्या तो काफी बढ़ी, लेकिन उनकी गति नहीं बढ़ी। तिस पर रेल यात्रा उतनी ही असुरक्षित और सुविधाओं से रहित भी है। इसी कमी को दूर करने के लिए ट्रेनों की रफ्तार बढ़ाने की योजना पर काम चल रहा है। मुंबई-अहमदाबाद के बीच बुलेट ट्रेन चलाने की तैयारियां हैं, तो राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में रैपिड रेल पर भी तेजी से काम चल रहा है। वंदे भारत की शुरुआत को इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। अलबत्ता इसकी शुरुआती तकनीकी खराबी को सबक की तरह लेना होगा। रेल यात्रा में बदलाव का अर्थ सिर्फ ट्रेन की गति बढ़ाना नहीं है। वह रफ्तार तो तब पकड़ेगी, जब पटरी और सिग्नल उसका साथ देंगे तथा कोहरे और पटरियों पर जानवरों के आ जाने की समस्या भी दूर की जाएगी। हमारी रेल व्यवस्था जिन कमियों से जूझ रही है, उनमें सुधार के लिए ज्यादा समय नहीं है। अलबत्ता उम्मीद करनी चाहिए कि इस ट्रेन के जरिये ही सही, रेल यातायात में सुधार होगा, और ट्रेन की रफ्तार बढ़ने के साथ-साथ दूसरी सुविधाएं भी बढ़ेंगी।

नफरत से निपटने की परीक्षा

नफरत से भरपूर पड़ोसी से परंपरागत तरीकों से नहीं निपटा जा सकता। खासकर तब, जब वह एटमी हथियारों से लैस है। भारत को भी पाकिस्तान की तरह दीर्घकालीन योजना पर काम करना पड़ेगा।

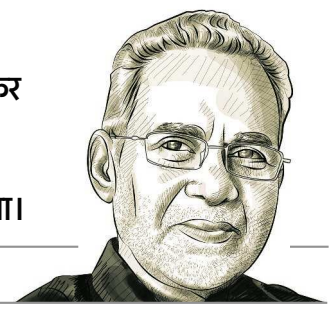

प्रदीप कुमार, वरिष्ठ पत्रकार

कश्मीर के पुलवामा जिले में जम्मू-श्रीनगर हाइवे पर सीआरपीएफ के दस्ते पर मानव बम से हमले या पाकिस्तान की ओर से संचालित अन्य आतंकी कार्रवाइयों के बारे में यह भ्रम कभी नहीं होना चाहिए कि 'कश्मीर मसले के राजनीतिक हल' के लिए पाकिस्तान अथवा उसके स्थानीय एजेंटों से बातचीत शुरू कर दें, तो यह सब रुक जाएगा। बातचीत तो कई बार विभिन्न स्तरों पर हो चुकी है। पाकिस्तान को सख्त सबक सिखाने से पहले सोचना होगा कि 1971 से बड़ा सबक और क्या हो सकता है। कारगिल का सबक तो उसके आगे बहुत मामूली था। भारत की इन कार्रवाइयों से पाकिस्तान ने कुछ नहीं सीखा, तो 'सर्जिकल स्ट्राइक' या ऐसी ही अन्य स्ट्राइकों से नहीं सुधर सकता।

मसूद अजहर को यकीन है कि एक दिन न सिर्फ कश्मीर, बल्कि उसके बहुत आगे तक जेहादियों का परचम फहराएगा। जैश और इस जैसी अन्य जेहादी जमातों की संरक्षक पाकिस्तानी फौज है। बात सिर्फ इतनी नहीं है कि अपने भारत-विरोधी सामरिक हितों की पूर्ति में फौज इन संगठनों का इस्तेमाल करती है। इससे भी ज्यादा अहम है वैचारिक साम्य। सैंडहर्स्ट में प्रशिक्षित, ब्रिटिश परंपरा में ढले, जनरल अयूब खान ने 1965 में कश्मीर छीनने के मकसद से हमला करने से पहले यकीन जताया, 'आम तौर से हिंदू मनोबल एक-दो सख्त चोटों के बाद बिखर जाएगा।'

अयूब को अपने रणकौशल पर इतना भरोसा था कि सेनाध्यक्ष और विदेश मंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो को लिखित निर्देश दिया, 'ऐसी कार्रवाई करें कि कश्मीर का मुद्दा ज्वलंत हो उठे, भारत का संकल्प कमजोर हो जाए और युद्ध भड़के बगैर वह बातचीत की मेज पर आ जाए।' यह थे बड़े मियां। छोटे मियां भुट्टो सुभान अल्लाह! 'सोशलिस्ट' भुट्टो ने हजार साल की जंग का एलान कर डाला।

यह वही जहरीली जहनियत थी, जो ढाका में घुटने टेकने से पहले पाकिस्तानी जनरलों को कोलकाता पर कब्जा करने का ख्वाब दिखा रही थी। पाकिस्तान की सैनिक मामलों की मशहूर लेखिका नसीम जेहरा ने हाल में प्रकाशित अपनी किताब *फ्रॉम कारगिल टु द कू : इवेंट्स दैट शुक पाकिस्तान* में लिखा है, कारगिल के नियोजकों को विश्वास था कि नियंत्रण रेखा के पार विस्तारित ऑपरेशन से बड़े स्तर पर सामरिक ऊंचाइयां पाकिस्तान के हाथ आ जाएंगी। जितनी अधिक भूमि पर कब्जा होगा, भारत से वार्ता के दौरान उतना ही कूटनीतिक और राजनीतिक लाभ हासिल किया जा सकेगा। हिसाब बड़ा सरल था-भारत पाकिस्तानी सैनिकों को सामरिक ऊंचाइयों से बेदखल नहीं कर पाएगा। पाकिस्तानी अफसरों को यकीन था कि भारत रक्षात्मक युद्ध भी नहीं लड़ पाएगा। मेजर जनरल जावेद हसन ने कहा था, 'डरपोक हिंदुस्तानी जंग नहीं लड़ पाएंगे।'

नफरत और हिकारत ने पाक फौजी अफसरों को किस तरह दिमागी लकवे से ग्रस्त कर रखा है, इसकी मिसाल पेश करती हुई नसीम जेहरा लिखती हैं, कारगिल के नियोजक मानकर चल रहे थे कि जब हिंदुस्तानियों को पता चलेगा कि पाकिस्तानी सैनिक नियंत्रण रेखा के इस पार आ चुके हैं और लेह में भारतीय सेना की जीवनरेखा को नियंत्रित कर रहे हैं, तो भारत आत्मसमर्पण का मन बना लेगा और पाकिस्तान की शर्तों पर समझौते के अलावा उसके सामने और कोई रास्ता नहीं होगा।

तत्कालीन सेनाध्यक्ष जनरल परवेज मुशर्रफ ने कहा, 'हम हिंदुस्तानियों को समझते हैं। ज्यादा से ज्यादा दबाव में ही वे गंभीर बातचीत के लिए तैयार होंगे।' चीफ ऑफ जनरल स्टाफ ले.ज. अजीज खान ने प्रधानमंत्री नवाज शरीफ से कहा, 'जनाब, कायदे आजम और मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान को कायम किया। अब अल्लाह ने आपको मौका दिया है कि फतह-ए-कश्मीर के लिए आप का नाम सुनहरे हरूफ में लिखा जाए।' अटल बिहारी वाजपेयी से दोस्ती की पींग बढ़ाने वाले नवाज ने भी इस पर यकीन कर लिया। जिन्ना और अयूब से लेकर आज तक पाकिस्तान के सैनिक-असैनिक कर्णधारों के चिंतन में एक निरंतरता है। पाकिस्तानी फौज के ब्रिगेडियर एसके मलिक ने अपनी नीति-निर्देशक पुस्तक *द कुरानिक कंसेप्ट ऑफ वार* में जो भी लिखा, वह पाक अफसरों के लिए अंतिम सत्य है, हालांकि यह मौलिक चिंतन नहीं है। करीब 2,300 साल पहले चीन के युद्ध विचारक सुन ने लिखा था कि दुश्मन के दिल को इतना आतंकित कर दो कि वह जंग लड़े बिना हथियार डाल दे। पाकिस्तानी सेना का वैचारिक योगदान यह है कि दुश्मन को कमतर साबित करने के लिए अपनी हर शिकस्त पर मोटा पर्दा डालकर झूठ बोलते रहो। जैसे, 1965 में फतह पाकिस्तान की हुई, 1971 में भारत ने पूर्वी पाकिस्तान में अवामी लीग की मदद से मौके का फायदा उठाया और जनरल नियाजी हिम्मत हार बैठे, वर्ना पाकिस्तान हारता नहीं और कारगिल में नवाज शरीफ की 'गद्दारी' से पाकिस्तान जीती हुई बाजी हार बैठा।

ऐसे अड़ियल और नफरत से भरपूर पड़ोसी से परंपरागत तरीकों से नहीं निपटा जा सकता। खासतौर से जब वह एटमी हथियारों से लैस हो। भारत सरकार ने तात्कालिक प्रतिक्रिया सशस्त्र सेनाओं पर छोड़ दी है। यह प्रतिक्रिया जो भी होगी, पाकिस्तान को मुस्तकिल सीख के लिए पर्याप्त नहीं होगी। निर्णायक सीख के रास्ते में पाकिस्तान के एटमी हथियार कब तक अवरोधक बने रहेंगे? अंतर महाद्वीपीय एटमी मिसाइलों से लैस रेजीमेंटें सोवियत संघ के विघटन को नहीं रोक पाईं। पाकिस्तान किस खेत की मूली है! उसने दीर्घकालीन योजना के तहत जैश-ए-मोहम्मद जैसी स्ट्राइक कोरों का गठन कर रखा है। भारत को भी दीर्घकालीन योजना पर काम करना पड़ेगा। वैसे भी फैसलाकुन जंग नियंत्रण रेखा पर नहीं, उस पार अंदरूनी इलाकों में करनी होगी।

यह भारत की समस्त राज्यसत्ता पर निर्भर है कि वह अपनी समग्र राष्ट्रीय शक्ति का इस्तेमाल कितने कौशल और केंद्रित तरीके से कर पाती है। नहीं कर पाएगी, तो हजार जख्मों से भारत का खून रिसाने का दुश्चक्र चलता रहेगा।

अंतर्ध्वनि

>> अज्ञेय

कला हमें आनंद देती है और हमारा उन्नयन भी करती है

***कहते** हैं कि जो सुंदर है वह शिवेतर हो ही नहीं सकता। इसे हम मानते हैं, किंतु यह ध्यान रखना होगा कि इससे यह ध्वनि होती है कि दोनों पर्यायवाची हैं। ऐसा दावा करना कठिन है। जो यह मानते हैं कि जो सुंदर है वह शिव भी होता ही है, वे भी कदाचित अलग से ऐसा दावा करने में संकोच करेंगे। नैतिक मूल्य यानी शिवत्व के मूल्य, और सौंदर्य के मूल्य अलग-अलग हैं और अलग विचार मांगते हैं। विशुद्ध तर्क के क्षेत्र में यह भी मान लेना होगा कि ऐसा हो सकता है कि कोई कलाकृति सुंदर हो और अशिव हो, या कम से कम शिव न हो। यह मान कर भी पहली बात कैसे मानी जा सकती है? स्पष्ट ही यहां विरोधाभास है। वास्तव में उच्च कोटि का नैतिक बोध और उच्च कोटि का सौंदर्य-बोध, कम से कम कृतिकार में प्रायः साथ-साथ चलते हैं। क्यों? क्योंकि दोनों बोध मूलतः बुद्धि के व्यापार हैं, मानव का विवेक ही दोनों के मूल्यों का स्रोत है और दोनों के प्रतिमानों या मानदंडों का आधार। विवेकशील मानव की- विशेषकर उस विवेकशील मानव की, जिसमें सृजनात्मक शक्ति या प्रतिभा भी है-ग्राहकता दोनों को ही पहचानती है। बुद्धि, और जिस पर बुद्धि आधारित है वह अनुभव-निरंतर विकासशील और संस्कारशील है। निरंतर सूक्ष्मतर होती हुई संवेदना एकांगी भी हो सकती है, पर जहां सर्जनात्मक शक्ति है वहां एकांगिता की संभावना कम है और पुष्ट सौंदर्य-बोध के साथ पुष्ट नैतिक बोध भी होता ही है। जिस प्रकार कृतिकार सुंदर का स्रष्टा होकर असुंदर के सायास परित्याग के द्वारा सुंदर की उपलब्धि नहीं करता, उसी प्रकार वह नैतिक द्रष्टा होकर सायास अनैतिक के विरोध द्वारा नैतिक को नहीं पाता; उसकी परिपुष्ट संवेदना सहज भाव से दोनों को पाती है-और देती है। इसीलिए कला हमें आनंद भी देती है, हमारा उन्नयन भी करती है। आज का समालोचक इस बात को नाना वादों के आवरण में छिपा चाहे सकता है, इसे अमान्य नहीं कर सकता।*

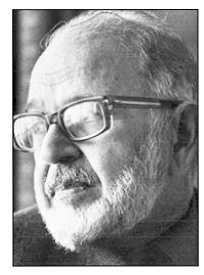

मंजिलें और भी हैं

>> महिता फर्नांडीज

भूख के उस एहसास ने हजारों का पेट भर दिया

मुझे उस दिन बहुत तेज भूख लगी थी, मगर मेरे आसपास खाने की कोई चीज नहीं मिल रही थी। पहली बार मुझे एहसास हुआ कि धन-दौलत, अच्छा काम और सब कुछ होने के बावजूद भूख लगने के वक्त अगर खाने को कुछ न मिले, तो सब कुछ बेकार लगता है। मुझे उन लोगों की पीड़ा का भी अंदाजा होने लगा, जिनके पास न रहने को घर है और न ही खाने का कोई इंतजाम। ऐसे लोग हमें सड़कों पर कहीं भी घूमते मिल जाएंगे। मेरे दिमाग में रह-रहकर यह सवाल बार-बार कौंधने लगा कि ऐसे लोग अपनी भूख से कैसे लड़ते होंगे। गरीब भूखों के लिए कुछ करने के लिए मेरी इतनी बेचैनी काफी थी।

मैं बंगलूरू में रहने वाली एक उद्यमी हूं। पिछले कई वर्षों से मैं यहां शहर में बच्चों से जुड़ा एक खास किस्म का प्रकल्प चला रही हूं। इससे पहले मैं कई बड़ी कंपनियों में कॉरपोरेट नौकरियां कर चुकी हूं। समाज के लिए कुछ करने की सोच पैदा होने के बाद मैंने काफी चिंतन करने के बाद तय किया कि आखिर मुझे करना क्या है। चूंकि इस नेक काम की शुरुआत मेरी खुद की भूख से जुड़ी थी, इसलिए मैंने जरूरतमंदों की भूख मिटाने का फैसला किया। लेकिन मेरा तरीका थोड़ा अनोखा था। मैंने अपने अभियान को नाम दिया- फीड योन नेबर यानी अपने पड़ोसी को खाना खिलाइए।

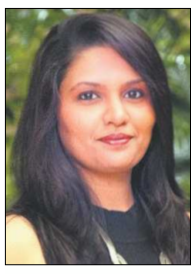

मेरे सपने को साकार करने में उन लोगों का योगदान ज्यादा है, जिन्होंने मुझ पर भरोसा किया।

मेरी सोच थी कि मैं अकेले कोई काम अंजाम दूं, इससे बेहतर है कि दूसरे सक्षम लोगों को भी अपने साथ लिया जाए। मैंने सोशल मीडिया को इस्तेमाल करके लोगों तक अपनी बात पहुंचाई, जिसमें मैंने आग्रह किया कि वे रोज अपने घर में थोड़ा-सा अतिरिक्त खाना पकाएं, ताकि उनके घरों के पास रहने वाले गरीबों का पेट भरा जा सके। मुझे लोगों को इस मुहिम से जोड़ने में बहुत अधिक मुश्किल नहीं आई। पहले तो मैंने लोगों से अपील करके ऐसा करने को कहा था, लेकिन बाद में कई लोग खुद ब खुद इस कार्यक्रम से जुड़ने लगे। हां, उम्मीद से ज्यादा खाना इकट्ठा होने के कारण उसे सही लोगों तक पहुंचाने में हमे थोड़ी दिक्कत जरूर आई। दिक्कत होती भी आखिर क्यों नहीं, पहले ही दिन हमने करीब साढ़े चार हजार लोगों को पेट भरने का इंतजाम कर लिया था। और यह मात्रा हर बीतते दिन बढ़ती गई।

मेरे लिए यह सफलता किसी सपने के पूरे होने से कम नहीं था। लेकिन मुझे पता है कि इस सपने को साकार करने में उन लोगों का योगदान ज्यादा है, जिन्होंने मेरी एक अपील पर मुझ पर भरोसा किया। मैंने इस मुहिम के लिए किसी दूसरी संस्था से मदद नहीं मांगी थी, लेकिन हमारे उद्देश्य से प्रभावित होकर कई संस्थाओं ने भी हमें मजबूत किया।

जिस घटना के बाद मैंने इस कार्यक्रम की शुरुआत की थी, वह बहुत ही सामान्य है और न जाने कितने अमीर लोग रोज ऐसी स्थिति से दो-चार होते होंगे। लेकिन मेरी एक छोटी-सी पहल हजारों लोगों की भूख मिटाने का जरिया बन गई। इसलिए मेरा मानना है कि यदि हम अपनी दिनचर्या में घटने वाली छोटी-छोटी बातों पर गौर करने लगें और सामाजिक सरोकारों को ध्यान में रखें, तो कई ऐसी युक्तियां हैं, जिनके सहारे बदलाव लाया जा सकता है। हमें बस शुरू करने की देर होती है, इस दुनिया में लाखों-करोड़ों नेक दिल इंसान हैं, जो हमारे पीछे चलने को तैयार मिलेंगे।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

तेजी से कम हो रही गरीबी

हाल ही ही में भारत से जुड़ी दो ऐसी रिपोर्टें आई हैं, जो देश में गरीबों की संख्या में आई तेज गिरावट के बारे में बताती हैं। ब्रुकिंग्स का एक अध्ययन यह बताता है कि हर मिनट पर 44 भारतीय अत्यंत गरीबी की श्रेणी से बाहर निकल रहे हैं।

अवधेश कुमार

हाल ही में भारत में गरीबी को लेकर ऐसी रिपोर्टें आईं, जिनसे हर भारतवासी प्रसन्न होगा। वर्ल्ड डाटा लैब ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि 2030 तक भारत में केवल 30 लाख लोग ही ऐसे होंगे, जिन्हें अति गरीब कह सकते हैं। वर्ल्ड डाटा लैब उन्नत सांख्यिकी मॉडल के जरिये वैश्विक गरीबी को मॉनिटर करती है। विश्व भर में गरीबी का इसका आकलन मान्य है।

ऐसे ही ब्रुकिंग्स के फ्यूचर डेवलपमेंट ब्लॉग में प्रकाशित अध्ययन के मुताबिक, हर मिनट पर 44 भारतीय अत्यंत गरीबी की श्रेणी से बाहर निकल रहे हैं। इसके अनुसार, भारत का अत्यंत गरीब आबादी वाला स्थान मई, 2018 से नाइजीरिया ने हासिल कर लिया है। वैश्विक मानक के अनुसार, अत्यंत गरीबी के दायरे में वे लोग आते हैं, जिनके पास जीवन यापन के लिए रोजाना 1.90 डॉलर यानी 134 रुपये भी नहीं होते।

भारत सरकार के आंकड़ों के अनुसार, 2012 में ग्रामीण क्षेत्र में गरीबी दर 25.7 प्रतिशत और शहरों में 13.7 प्रतिशत थी। वर्ल्ड डाटा लैब ने कहा है कि 2018 में भारत में ग्रामीण क्षेत्र में केवल 4.3 प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्र में 3.8 प्रतिशत आबादी को ही गरीब माना जाएगा। भारत सरकार ऐसा आंकड़ा दे, तो हंगामा मच जाए। ब्रुकिंग्स का अध्ययन कहता है कि 2022 तक भारत में अत्यंत गरीब जनसंख्या केवल तीन प्रतिशत रहेगी। इसका भी मानना है कि 2030 तक भारत से अत्यंत गरीबी की परिधि में आने वाली आबादी पूरी तरह खत्म हो जाएगी। इसी अध्ययन रिपोर्ट के मुताबिक, मई 2018 में भारत में सात करोड़ 30 लाख लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे थे। इनकी संख्या नाइजीरिया में आठ करोड़ 70 लाख है। वर्ल्ड डाटा लैब के मुताबिक, अब भी भारत में करीब पांच करोड़ लोग ऐसे हो सकते हैं, जो 1.90 डॉलर प्रतिदिन पर गुजारा करते हैं।

संयुक्त राष्ट्र का उद्देश्य 2030 तक दुनिया से गरीबी हटाना है। उसका मानना है कि तब तक गरीबी पूरी तरह समाप्त करने के लिए भारत को सात से आठ फीसदी की दर से विकास करना होगा। इस समय हमारी विकास दर इसी के आसपास है। सहस्राब्दी विकास लक्ष्य रिपोर्ट, 2014 में कहा गया था कि दुनिया के समस्त निर्धनतम लोगों का 32.9 प्रतिशत हिस्सा भारत में रहता है। विश्व बैंक ने आठ वर्ष पहले कहा था कि विश्व की संपूर्ण गरीब आबादी का तीसरा हिस्सा भारत में है। आज के आंकड़ों से तुलना करें, तो पता चलता है कि देश में गरीबी तेजी से कम हो रही है। डाइरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर, मनरेगा, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, स्वच्छता कार्यक्रम, जनवितरण प्रणाली, बच्चों व माताओं के लिए पोषण पर आधारित योजनाओं का बेहतर क्रियान्वयन, पीने का साफ पानी, शौचालय की सुविधा और स्वास्थ्य सेवाओं तक आसान पहुंच आदि से चीजें बदल रही हैं।

तेजी से बनती सड़कें, बंदरगाह, हवाई अड्डे आदि विकास की गति तीव्र करने के साथ रोजगार के साधन तो हैं ही। किसानों को फोकस करके जो योजनाएं बनी हैं, उनका एक सीमा तक लाभ अवश्य मिला है। ये ठीक तरीके से आगे बढ़ें, तो जैसा कि नीति आयोग ने माना है, साल 2022 तक हम गरीबी मुक्त भारत का लक्ष्य अवश्य हासिल कर सकते हैं।

यह तो नहीं कहा जा सकता कि देश के निचले तबके के जीवन की दुश्वारियां मिट गई है। वहां तक पहुंचने तथा मानक जीवन स्तर पर पूरी आबादी को लाने के लिए काफी कुछ करना शेष है। पर जितना हुआ है, उसे स्वीकारने की जरूरत है।

खुली खिड़की

सबसे बड़ी विधायिका

जनसंख्या के मामले में चीन के बाद भारत का स्थान भले ही दूसरा हो, पर संघीय विधायिका के सदस्यों के हिसाब से भारत दुनिया में पांचवें स्थान पर आता है।

करीब तीन हजार केंद्रीय जनप्रतिनिधियों के साथ चीन सबसे ऊपर है।

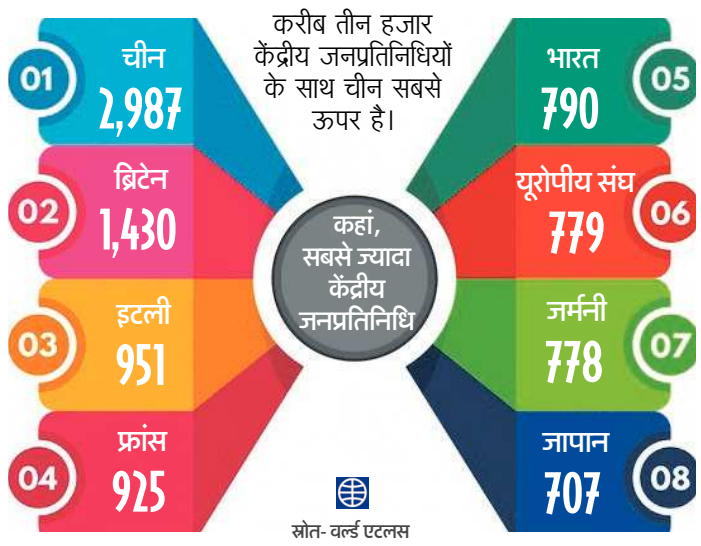

स्रोत- वर्ल्ड एटलस

जीवन बहुमूल्य है

एक मनुष्य किसी महात्मा के पास जाकर कहने लगा, जीवन इतना छोटा क्यों है। इस थोड़े से समय में क्या-क्या करें? बाल्यकाल में ज्ञान नहीं रहता। बुढ़ापा उससे भी बुरा होता है। युवावस्था में कुटुंब का भरण-पोषण किए बिना नहीं चलता। तब भला लोक सेवा कब की जाए? इस जिंदगी में तो समय मिलता नहीं दिखता। इतना कहकर वह खिन्न होकर रोने लगा। उसे रोते देख महात्मा भी रोने लगे। उस आदमी ने पूछा, आप क्यों रो रहे हैं? महात्मा ने कहा, क्या करूं बच्चा! खाने के लिए अन्न चाहिए। पर अन्न उपजाने के लिए मेरे पास जमीन नहीं है। मैं भूख से मर रहा हूं। परमात्मा के एक अंश में माया है। माया के एक अंश में तीन गुण है। गुणों के एक अंश में आकाश है। आकाश में थोड़ी-सी वायु है और वायु में बहुत आग है। आग के एक भाग में पानी है। पानी का शतांश पृथ्वी है। पृथ्वी के आधे हिस्से पर पर्वतों का कब्जा है। नदियों और जंगलों को जहां देखो, वहां अलग बिखरे पड़े है। मेरे लिए भगवान ने जमीन का एक नन्हा-सा टुकड़ा भी नहीं छोड़ा। तब बताओ, मैं भूख से नहीं मरूंगा? उस मनुष्य ने कहा, यह सब होते हुए भी आप जिंदा तो हैं, फिर रोते क्यों हैं? महात्मा बोल उठे, तुम्हें भी तो बहुमूल्य जीवन मिला है, फिर 'समय नहीं मिलता, जीवन समाप्त हो रहा है' की रट लगाकर क्यों हाय-हाय करते हो। जो कुछ भी है, उसका तो उपयोग करो।

सत्संग

-संकलित

हरियाली और रास्ता

युवराज, राज्य और साधु

एक युवराज की कथा, जिसे एक साधु ने गुड़ियों के माध्यम से शासन संचालन के मंत्र दिए।

***एक** राजा ने बेटे को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया लेकिन राज्य के ज्यादातर लोगों को एक चिंता सता रही थी। युवराज अभी अट्ठारह साल के भी नहीं हुए थे, वह कैसे राज्य को नियंत्रित करेंगे? एक साधु बाबा जब युवराज को बधाई देने पहुंचे, तो उन्होंने पहले तो युवराज को ढेरों आशीर्वाद दिए, फिर अपनी पोटली में से तीन गुड़िया निकाली और युवराज को भेंट कर दी। युवराज साधु बाबा पर भड़क गए और बोले, क्या मैं आपको बच्चा दिखाई देता हूं। साधु बाबा मुस्कराकर बोले, युवराज, हर कोई चिंतित है कि आप राज्य का संचालन ठीक से कर पाएंगे या नहीं। इन गुड़ियों के माध्यम से मैं सिर्फ आपकी मदद करना चाहता हूं। साधु बोले, इन तीनों गुड़ियों के कानों में एक छेद दिख रहा होगा आपको। इस छेद में रस्सी डालकर देखिए तो जरा, क्या होता है। युवराज ने पहली गुड़िया के कान में रस्सी डाली, तो वह दूसरे कान से निकल आई। साधु बाबा बोले, यह उन लोगों की तरह है, जिनके अंदर कोई भी बात नहीं टिकती। फिर युवराज ने दूसरी गुड़िया के कान में रस्सी डाली और वह उसके मुंह से निकल आई। साधु बोले, यह उन लोगों की तरह है, जो कुछ भी सुनते ही तुरंत बोल देते हैं, बिना सोचे कि वह सही भी है या नहीं। युवराज ने तीसरी गुड़िया के कान में रस्सी डाली, तो वह अंदर तो गई, लेकिन कहीं से नहीं निकली। साधु बोले, यह उन लोगों की तरह है, जो सुनते-समझते तो सब कुछ हैं, पर शांत रहते हैं। युवराज बोले, लेकिन इससे मुझे क्या करना? साधु बोले, एक अच्छा संचालक, एक अच्छा राजा वही होता है, जो यह बात समझ सके कि उसे कब, क्या बोलना है, कब कुछ नहीं बोलना है, और कब सिर्फ सुनना है। युवराज ने साधु बाबा से आशीर्वाद लिया और उन्हें आश्वस्त किया कि वह ऐसा ही करेंगे।*

जो अपनी जुबान पर संयम पा ले, वह सफलता से नेतृत्व कर सकता है।